E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

कठोपनिषद् के प्रथम अध्याय का सारांश

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

कठोपनिषद् आत्मविद्या का प्रतिपादक ग्रन्थ है जिसमें यम और नचिकेता के संवाद के माध्यम से आध्यात्मिक चर्चा है। कठोपनिषद् में कुल दो अध्याय हैं और प्रत्येक में तीन वल्ली। इस प्रकार कुल छः वल्लियाँ हैं।

महर्षि वाजश्रवा (उद्दालक) ने सर्वमेध अथवा विश्वजित् नामक यज्ञ किया। इस यज्ञ में अपना सर्वस्व (सब कुछ) दान दे देना पड़ता है। उसने अपना सब कुछ समर्पण करके इस यज्ञ को किया-

"ॐ उशन् ह वै वाजश्रवसः सर्वमेधसम् ददौ।

तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस"।।

उस समय गोधन ही सर्वश्रेष्ठ धन माना जाता था। इन ऋषि का एक पुत्र था जिसका नाम था नचिकेता। यज्ञ की पूर्णता पर उन्होंने ऐसी गायों को दान में दिया जो अत्यन्त वृद्ध थीं तथा जिनकी इन्द्रियाँ शिथिल हो चुकी थीं। महर्षि वाजश्रवा के पुत्र नचिकेता ने जब ऐसी गायों को दान में देते हुए देखा तो विचार किया कि अनुपयोगी गायों को दान में देना वाला दाता अनन्दा नाम के लोक को प्राप्त है जो आनन्द से रहित है-

"पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः।

अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति ता ददत्"।।

उसने सोचा कि इन अदेय गायों का दान करने से पिता को पुण्य के स्थान पर पाप ही लगेगा और परिणामस्वरूप वे नरक के ही भागी होंगे। पुत्र का कर्तव्य है कि वह अपने पिता को नरक में जाने से बचाये (पुत्र शब्द की व्युत्पत्ति ही इस अर्थ की द्योतक है) "पुं नरकात् त्रायते इति पुत्रः"।

पिता के द्वारा वृद्ध गायों को दान में देते हुए देखकर उस छोटे बालक नचिकेता को स्वाभाविक रूप से आश्चर्य हुआ, अतः जिज्ञासावश पिता से यह पूछा कि आप इस विश्वजित् यज्ञ में मुझे किसे दान में देंगे।। ऐसा उसने अपने पिता से तीन बार पूछा। अनेक बार पूछने पर पिता उद्दालक को क्रोध हो आया और उनके मुख से निकल पड़ा मैं तुझे मृत्यु (यमदेवता) को देता हूँ।

पिता की आज्ञा को शिरोधार्य कर नचिकेता यमलोक गया और यम के अनुपस्थित रहने पर तीन दिनों तक बिना कुछ खाये पिये वहीं रहा। तीन दिन पश्चात् जब यम आते हैं तो उनकी पत्नी उनको बतलाती है कि अपने दरवाजे पर बिना अन्न-जल को ग्रहण किये ती दिन से अतिथि पड़ा हुआ है। यह जानकर उन्हें बहुत कष्ट हुआ क्योंकि अतिथि का बहुत अधिक महत्त्व है। यमराज ने विचार किया कि जिस अल्पबुद्धि वाले पुरुष के घर में न खाया हुआ अर्थात् भूखा ज्ञानेच्छु ब्राह्मण रहता है, उसकी आशाओं एवं आकांक्षाओं को, सत्सङ्गति के फल को, मधुरवाणी को, यज्ञादि इष्ट और पूर्त कार्यों के फल को तथा पुत्रों एवं पशु धनादि को नष्ट कर देता है-

"आशाप्रतीक्षे संगतं सूनृतां चेष्टापूर्ते पुत्रपशूंश्च सर्वान्।
एतद् वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो यस्यानश्यन् वसति ब्राह्मणो गृहे"।।

ऐसा विचार कर यमराज ने नचिकेता को कहा हे नमस्कार के योग्य ब्राह्मण अतिथि! तुम्हें नमस्कार है। तुम्हें नमस्कार है, मेरा कल्याण हो। तुमने घर में बिना खाए तीन रात निवास किया है, इसलिए तुम मुझसे तीन वरदान माँग लो-

"तिस्रो रात्रीर्यदवात्सीर्गृहे मेऽनश्नन् ब्रह्मन् अतिथिर्नमस्यः।
नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मेऽस्तु तस्मात्प्रति त्रीन् वरान् वृणीष्व"।।

यह सुनकर नचिकेता ने प्रथम वर में इस लोक से सम्बन्धित वर की याचना की। उसे अपने पिता की चिन्ता थी, वह सोच रहा था कि मेरे पिता मेरे शोक में ही पड़े रहेंगे और इस भाँति वे अपने द्वारा किये हुए विश्वजित् यज्ञ के फल के भागी भी न हो सकेंगे। अतः उसने यम से कहा कि मेरे पिता प्रसन्न और क्रोधरहित तथा शान्तमन हो जावें तथा आपके समीप से लौटकर जब उनके समीप वापस पहुँचूँ तब वे मुझसे प्रेमपूर्ण ही व्यवहार करें-

"शान्तसङ्कल्पः सुमना यथा स्याद्वीतमन्युर्गौतमो माभिमृत्यो।

त्वत्प्रसृष्टं माभिवदेत् प्रतीत एतत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे"।।

यम ने उसकी इच्छानुसार प्रथम वर प्रदान किया और द्वितीय वर माँगने के लिए कहा। नचिकेता ने दूसरा वर परलोक अर्थात् स्वर्गलोक के सम्बन्ध में माँगा। नचिकेता ने कहा-"स्वर्गलोक में कुछ भी भय नहीं है। न वहाँ आप हैं अर्थात् मृत्यु है, न वृद्धावस्था से डर रहता है। भूख और प्यास दोनों को पार करके शोकमुक्त होकर आनन्दित होता है। हे यमराज! आप उस स्वर्ग की साधनभूत अग्नि को जानते हैं। उस अग्नि के प्रति श्रद्धा रखने वाले मुझको उसके विषय में बताइये। स्वर्ग में गए हुए मनुष्य अमरता को प्राप्त करते हैं। यह अग्नि से सम्बन्धित ज्ञान ही मैं दूसरे वरदान के रूप में आपसे माँगता हूँ"। यमाचार्य ने इस विधान को उन्हें पूर्णरूप से बतलाया और साथ ही नचिकेता की परीक्षा भी ली कि वस्तुतः वह इस स्वर्ग को प्राप्त कराने वाले यज्ञ और यज्ञाग्नि के बारे में क्या समझा है? नचिकेता ने ज्यों का त्यों उनको बतला दिया। इससे प्रसन्न होकर यमाचार्य ने अपनी ओर से यह वर और प्रदान किया कि यह अग्नि उसी नचिकेता के नाम से संसार में प्रसिद्ध हो। इसके अनन्तर नचिकेता से तृतीय वर माँगने को कहा।

नचिकेता का तृतीय वर आत्मज्ञान से सम्बन्धित था। नचिकेता इस आत्मज्ञान को जानना चाहता था। अतः तृतीय वर में उसने आत्मतत्त्व के बारे में ही वर माँगा। आचार्य यम जानते थे कि आत्म-ज्ञान का जो अधिकारी हो उसी को यह ज्ञान देना चाहिये, अन्य को नहीं। अतः उन्होंने नाना प्रकार के सांसारिक प्रलोभनों की प्राप्ति का लोभ देकर नचिकेता की परीक्षा ली। वह उन लोभों में न पड़ा क्योंकि वह सभी सांसारिक विषय वासनाओं तथा पदार्थों की नश्वरता एवं क्षणभंगुरता से परिचित था। परिणामतः वह इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ। यम उससे अत्यधिक प्रसन्न हुए और उसे आत्मज्ञान सम्बन्धी विस्तृत उपदेश दिया। नाना प्रकार से उसे समझाया। इस ज्ञान को नचिकेता ने बड़े धैर्य एवं विश्वास तथा शान्ति के साथ श्रवण किया और तदन्तर उस पर मनन और निदिध्यासन आदि कर उस विष्णुलोक अथवा परमधाम अथवा मोक्ष अथवा परममुक्तावस्था कि जो जीवन का है। आत्मज्ञान से सम्बन्धित कतिपय रहस्यों का यहाँ उल्लेख किया जा रहा है-

फल की दृष्टि से जगत् के सभि कार्य दो प्रकार के होते हैं-श्रेय और प्रेय। श्रेय मार्ग आध्यात्मिक है और लौकिक भोग प्रेय है। सामान्यतः मनुष्यों की प्रवृत्ति प्रेय के प्रति रहती है। जो श्रेय के प्रति उन्मुख होते हैं, वे सांसारिक बन्धनों से मुक्त होकर परमपद प्राप्त करते हैं। यमराज ने यह भी बतलाया कि धन के मोह से मोहित हुए, आलस्य करने वाले अज्ञानीजन को परलोक नहीं दिखाई देता है। ऐसे अज्ञानी पुरुष की दृष्टि में यही लोक है, परलोक की कोई सत्ता नहीं है। ऐसा मानने वाला व्यक्ति बार-बार मेरे (यमराज के) वश में आता है। अर्थात् मनुष्य बार-बार जन्म लेता है तथा बार-बार को मृत्यु को प्राप्त होता है। आत्मा के रहस्य का प्रतिपादन करते हुए यमराज कहते हैं-"यह चेतन आत्मा न उत्पन्न होती है और न मरती है। यह न किसी से और न कहीं से उत्पन्न होती है। यह अजन्मा, नित्य, अविनाशी तथा पुरातन है। शरीर नाश होने पर भी इसका नाश नहीं होता है"-

"न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चत्।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे"।।

उन्होंने आगे कहा कि शरीर अनित्य, जबकि उसमें स्थित आत्मा नित्य है। मानव का जीवनपथ यात्रा की भाँति है, जिसमें शरीर रथ, बुद्धि सारथी, इन्द्रियाँ अश्व, मन लगाम और विषय मार्ग है। जीवात्मा इस रथयात्रा का रथपति है। शरीर, इन्द्रिय और मन से मुक्त जीवात्मा भोक्ता है। जैसे सारथी विवेकपूर्वक लगाम खींचकर घोड़ों को सही मार्ग पर चलता है, उसी प्रकार मन रूपी लगाम को वश में करके जो इन्द्रिय रूपी अश्वों को संयत कर लेता है, वह संसार मार्ग का अतिक्रमण कर परम पद का अधिकारी हो जाता है। यमराज ने यह भी बताया कि परमात्मा को प्राप्त करने वाले व्यक्ति की समस्त ग्रन्थियाँ खुल जाती हैं, अतः परमात्मा को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।